आजादी का स्वप्न और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता

(संदर्भ: मुक्तिबोध और रघुवीर सहाय)

डॉ नीलेश कुमार

सह-अध्येता,भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,शिमला

सहायक प्राध्यापक,हिन्दी विभाग

स्वर्गीय विश्वनाथ सिंह शर्मा महाविद्यालय ,बेगूसराय,बिहार

thankyouneelesh@gmail.com

9644376749

बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्ध हिन्दुस्तानी जनता के लिए अपनी आजादी को पाने के लिए संघर्ष करने का समय रहा है।महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरु,चंद्रशेखर आजाद,भगत सिंह जैसे स्वतन्त्रता सेनानियों के नेतृत्व में हिन्दुस्तानी जनता आज़ादी की लड़ाई लड़ रही थी।हिन्दुस्तान की ज़मीन को ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्ति दिलाने और अंग्रेजों को बैरंग वापस भेजने की इस लड़ाई के केंद्र में यहाँ की जनता की मुक्ति की आकांक्षा थी।भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम केवल राजनीतिक संघर्ष न था, बल्कि एक महान सांस्कृतिक और भावनात्मक आंदोलन भी था। इस आंदोलन के केंद्र में *आजादी का स्वप्न* था—एक ऐसा सपना जिसमें मानव-मूल्यों, गरिमा, समानता, न्याय और स्वाभिमान की अवधारणाएँ शामिल थीं।

नेहरु जी ने संविधान सभा के अपने ऐतिहासिक भाषण 'नियति से साक्षात्कार' के माध्यम से जनता को संबोधित करते हुए कहते हैं कि "कई सालों पहले, हमने नियति के साथ एक वादा किया था, और अब समय आ गया है कि हम अपना वादा निभायें, पूरी तरह न सही पर बहुत हद तक तो निभायें। आधी रात के समय, जब दुनिया सो रही होगी, भारत जीवन और स्वतंत्रता के लिए जाग जाएगा। ऐसा क्षण आता है, मगर इतिहास में विरले ही आता है, जब हम पुराने से बाहर निकल नए युग में कदम रखते हैं जब एक युग समाप्त हो जाता है, जब एक देश की लम्बे समय से दबी हुई आत्मा मुक्त होती है।...हमारी पीढ़ी के सबसे महान व्यक्ति की यही इच्छा है कि हर आँख से आंसू मिटे। संभवतः ये हमारे लिए संभव न हो पर जब तक लोगों कि आंखों में आंसू हैं तब तक हमारा कार्य समाप्त नहीं होगा। आज एक बार फिर वर्षों के संघर्ष के बाद, भारत जागृत और स्वतंत्र है। भविष्य हमें बुला रहा है। हमें कहाँ जाना चाहिएऔर हमें क्या करना चाहिए, जिससे हम आम आदमी, किसानों और श्रमिकों के लिए स्वतंत्रता और अवसर ला सकें, हम निर्धनता मिटा, एक समृद्ध, लोकतान्त्रिक और प्रगतिशील देश बना सकें।"1राजनैतिक रूप से नेहरु जी नेभविष्य के हिन्दुस्तान के लिए एक स्पष्ट रूपरेखाको सामने रखा।इन विचारों ने लम्बे समय से गुलामी की पीड़ा को झेल रहे भारतीय जनमानस को आजाद मुल्क में सांस लेने के महास्वप्न ने गहरे तक प्रभावित किया। इसकी साहित्यिक अभिव्यक्ति उस समय के रचनाकारों की रचनाओं में देखी जा सकती है। साहित्य की सभी विधाओं में आज़ादी के लिए जारी इस संघर्ष को स्वर मिल रहा था। कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक के माध्यम से रचनाकारों ने भारतीय जनता की गुलामी से मुक्ति की कामना को अपने शब्द दिए। मुक्ति के इन स्वरों को सबसे ज्यादा कविता के भीतर देखा जा सकता है।

रामधारी सिंह दिनकर, सोहनलाल द्विवेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी आदि कवियों ने स्वतंत्रता की आकांक्षा को अपने काव्य का केंद्र बनाया।माखनलाल चतुर्वेदी की *"पुष्प की अभिलाषा"* में मातृभूमि के प्रति समर्पण और बलिदान का भाव आज भी उतना ही जीवंत है।दिनकर की *क्रान्तिकारी चेतना* और 'राष्ट्रीय ऊष्मा' ने जनता को संघर्ष के लिए प्रेरित किया।हिन्दी कविता के भीतर छाया हुआ रोमान अब खत्म होने लगा स्वयं पन्त ने 'युगांत' से इसके अंत की घोषणा की। रोमान की जगह यथार्थ ने लेना शुरु किया। वैश्विक और देश के भीतर के हल-चल ने साहित्यिक लेखन को भी प्रभावित किया ।नागार्जुन,केदारनाथ अग्रवाल,त्रिलोचन ने कविता के प्रगतिशील धारा को समृद्ध किया। प्रगतिशील चेतना के निर्माण ने साहित्य के भीतर सामान्य जन, स्त्रियों, किसानों, श्रमिकों और युवाओं की भावनाओं को आवाज दी। इन कवियों के लिए आजादी केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि मानव-गरिमा की स्थापना का स्वप्न था।राजनैतिक स्वतंत्रता के साथ सामाजिक स्वतंत्रता की जरूरत पर बल था। राष्ट्रीय काव्य धारा के कवियों के यहाँ देश प्रेम की आवेगात्मक आवाजों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,जिससे उथल-पुथल मच जाए,

एक हिलोड़ इधर से आये एक हिलोड़ उधर से आये। 2 (बालकृष्ण शर्मा)

मुझे तोड़ लेना वनमाली,देना तुम उस पथ पर फेंक,

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पर जाते वीर अनेक। 3(माखनलाल चतुर्वेदी)

सुनूँ क्या सिन्धु मैं गर्जन तुम्हारा,

स्वयं युग-धर्म का हुँकार हूँ मैं। 4(दिनकर)

कविता के भीतर एक जबरदस्त बदलाव हो रहा था। छायावादी कवियों के यहाँ हो रहे परिवर्तन को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कविता में स्त्री "नारी तुम केवल श्रद्धा हो" की जगह "इलाहाबाद के पथ पर तोड़ती पत्थर" के रूप में सामने आने लगी। कविता के कानन की रानी अब खुरदुरी जमीं को महसूस करने लगी। प्रकृति के मानवीकरण की जगह खुद मनुष्य ने ले लिया। कल्पना की ऊँची उड़ान की जगह मनुष्य अब संशयग्रस्त होकर अपने आस-पास को देखना शुरु करता है। यहाँ तक की निराला के राम के भीतर भी उस संशयग्रस्त स्थिति का बोध होता है और वो कहते हैं –

स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा फिर-फिर संशय,

रह-रह उठता जग जीवन में रावण-जय-भय (राम की शक्तिपूजा-निराला) 5

राम के अन्दर का यह भय तत्कालीन भारतीय जनता के भीतर का संशयग्रस्त मन का प्रतीक है। आजादी को लेकर देखे जा रहे स्वप्न को यथार्थ की पहचान को ठोस वैचारिक जमीन प्रगतिवादी धारा के कवियों ने मुहैया कराया.जनता से जुड़कर उन्होंने उनके मूल प्रश्नों को कविता का विषय बनाया। इस परिस्थिति में साहित्य ने पुन: जनता के प्रश्नों को सामने लाने का काम किया। कविता ने इस आवश्यक कार्य में सबसे ज्यादा ताकतवर और प्रभावी रूप से अपनी भूमिका का निर्वाह किया। मानवीय गरिमा के साथ जीवन और जीवन के प्रति बहुलतावादी दृष्टिकोण कविता के विषय के रूप में सामने आने लगे। राजनीतिक सत्ता से सीधा सवाल किया जाने लगा. बकौल नागार्जुन "जनता मुझसे पूछ रही है क्या बतलाऊं/जन कवि हूं मैं साफ कहूंगा क्यों हकलाऊं"6 बिना हकलाहट के सवालों को अपनी कविता का मुख्य स्वर बनाने का काम इस धारा के कवियों ने किया। क्या स्वतंत्रता केवल सत्ता-परिवर्तन है या आम आदमी के जीवन में वास्तविक परिवर्तन भी?कविता

अब जीवन के मूल अधिकारों को अपने केंद्र में ला रही थीस्वतंत्रता,लिंग-समानता,जाति-व्यवस्था,पर्यावरण आदि नए सवालों को उठा रही थी।इन सवालों के बीच उम्मीद भी थी। आजादी के जश्न का एक सपना था। नई सुबह के अनेक गीत थे जिसे गाए जाने थे। एक सुनहरा रोमांस था सबके भीतर।

(क)सब ऋतुओं का सुख खिंच आये इस फागुन के पास

सरस फलों की मीठी आशाओं की उड़े सुवास

नव आशाओं का मानव को वासंती उपहार7(वसंत-रघुवीर सहाय)

(ख)जिस देश प्राणों की जलन में

एक नूतन स्वप्न का संचार हो,

ओ हृदय मेरे,उस ज्वलन की भूमि में बिछ जा स्वयं ही,

औ तड़प कर उस निराले देश में तू खोल आँखे8(खोल आँखें-मुक्तिबोध)

एक नवनिर्माण की आकांक्षा को लेकर सब चल रहे थे। इस चलने में अपने परिवेश के प्रति सभी विशेष रूप से जागरूक थे। जिस आजादी के महास्वप्न को लेकर हिन्दुस्तानी जनता चली थी उसका परिणाम विभाजन जैसी त्रासदी के रूप में सामने आया। इसलिए जो आजादी मिली उसपर संदेह और सवाल दोनों किये जा रहे थे। फैज,गिरिजा कुमार माथुर,नागार्जुन,दिनकर आदि कवियों ने इस आजादी पर संदेह और सवाल दोनों किये ।फैज,गिरिजा कुमार माथुर,नागार्जुन,दिनकर आदि कवियों ने इस आजादी पर संदेह और सवाल दोनों किये।

(क) आज जीत के रात/पहरुए सावधान रहना

खुले देश के द्वार/अचल दीपक समान रहना 9 (पन्द्रह अगस्त-गिरिजा कुमार माथुर)

(ख) ये दाग-दाग उजाला,ये सबगजीदा सहर

वो इन्तजार था जिसका,ये वो सहर तो नहीं। 10 (सुबह-ए-आजादी : फैज)

संदेह और सवालों से गुजरती हुईआजादी के साथ भारतीय मन का एक विश्वास भी कहीं न कहीं जुड़ा हुआ था। स्वतंत्रता,समानता,न्याय,सहमती,सहिष्णुता,नागरिक भागीदारी,राजनीतिक सत्ता में भाग लेने का अधिकार आदि प्रश्न सामने खड़े थे। इन सबके बीच एक आशा भी थी।

(क)ऊँची हुई मशाल हमारी,आगे कठिन डगर है.

शत्रु हट गया,लेकिन उसकी

छायाओं का डर है

शोषण से मृत समाज,कमजोर हमारा घर है.

किन्तु आ रही नई जिन्दगी

यही विश्वास अमर है. 11 (पन्द्रह अगस्त -गिरिजा कुमार माथुर)

(ख) हमको तो अपने हक सब मिलने चाहिए

हम तो सारा का सारा लेंगें जीवन

'कम से कम' वाली बात न हमसे कहिए।12(हमने यह देखा-रघुवीर सहाय)

इन आशाओं और विश्वासों के समानांतर मुल्क की आजादी तो मिल गयी थी लेकिन मुल्क जाती,वर्ग,भाषा और धर्म जैसे मुद्दों को लेकर आपस में उलझ रहे थे। समझौते बसे मिली आजादी ने जिस विभाजन की पीड़ा को पैदा किया उसने इस आजादी को अधूरी,खंडित और विडंबना से भर दिया था। देश की आजादी का जनता स्वागत तो कर रही थी लेकिन उसका परिणाम मनोनुकूल नहीं रहा। आजादी का स्वप्न आज भी पूर्ण नहीं हुआ,बल्कि बदलते समय के साथ उसका अर्थ और संघर्ष दोनों विकसित हुए हैं।इसलिए आजादी के पश्चात विभाजन की त्रासदी झेलती हुई हिन्दुस्तानी जनता के सपनों के टूटन और आज़ादी से जुड़े उसके यूटोपिया के खत्म होने की गहरी शिनाख्त कविता ही करती है। एक लम्बे संघर्ष के बाद मिली आजादी का खुमार जल्द ही उतर गया था। एक भयानक सच का सामना यहाँ की जनता कर रही थी। देश के स्वतंत्र होने के बाद जल्दी ही एक आजाद मुल्क की हवा, उसकी रीति-नीति, जनता के प्रति जबावदेही, अभिजात्य की जगह सामान्य की प्रतिष्ठा, उपनिवेशी सोच और कार्य संस्कृति से मुक्ति आदि की कल्पना बीते समय की बात लगने लगी। शोषक और शोषित का फर्क पहले की तरह बना और बचा था। सच्चे अर्थों में लोकतांत्रिक होने की जगह, केवल बाहरी तौर पर लोकतान्त्रिक दिखने ने ले लिया था।

जनता और तंत्र के विपत्तिग्रस्त सम्बन्ध को सच्चाई के साथ लाने का काम स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता के अधिकांश कवियों ने किया है। किन्तु मुक्तिबोध और रघुवीर सहायके यहाँ आजादी के महास्वप्न के टूटने और लोकतान्त्रिक भारत के जनसमाज की पीड़ा की यथार्थपड़क अभिव्यक्ति है। इसलिए रघुवीर सहाय कहते हैं कि "एक झीना-सा परदा था दोनों के बीच/लोगों के और मौसम के/मैंने उसे हटा दिया." 13 इसी सच को मुक्तिबोध कुछ इस तरह कहते हैं-"कविता में कहने की आदत नहीं, पर कह दूँ/ वर्तमान समाज में चल नहीं सकता।/पूँजी से जुड़ा हुआ हृदय बदल नहीं सकता/स्वातन्त्र्य व्यक्ति वादी / छल नहीं सकता मुक्ति के मन को,/जन को"।14

मुक्तिबोध तत्कालीन भारतीय मन को ठीक से देख रहे थे। वर्तमान रचनाशीलता से कुछ और की चाहत कर रहे थे। उनका कहना था कि "आज की कविता वस्तुत: पर्सनल सिचुएशन की,स्व-स्थिति की,स्व-दशा की कविता है। किन्तु अब जिन्दगी का यह तकाजा है कि वह अपनी इस निज समस्या को वर्तमान युग की मानव-समस्याओं केरूप में देखें और उन्हें वैसा चित्रित करें। "15 (र.5,पृ.206)इसलिए अपनी कविता 'ज़माने का चेहरा' में कहते हैं- "जन-राष्ट्र-लोकायन/जन-मुक्ति-आन्दोलन/के सिद्धहस्त विरोधी/ये साम्राज्यवादियों की पांत में ही बैठे हैं,/शान्ति के शत्रुओं का प्राणायाम साधकर/जनता के विरुद्ध घोर अपराध कर/फांसी के फंदे की रस्सी-से ऐंठे हैं!/भविष्य को बढ़ने ही नहीं देगा जब तक/कि उसका न नाश हो!!.../इसी सोच में/लिखता ही जाता हूँ/कविता की पंक्तियाँ" । 16 मुक्तिबोध ने समाज और राजनीति के संगठित रूपों के आंतरिक क्षरण को पहचान लिया था। एक ऐसी स्थति बन रही थी जो हमारे परिचित और परोस को उसकी सच्चाई से दूर ले जा रही थी।

इसी दूर जाती सच्चाई को रघुवीर सहाय भी पहचान रहे थे। 'लोकतंत्र का संकट' कविता में वो इसे और स्पष्टता के साथ कहते हैं-

“तब जो लोग सचमुच जानते हैं कि यह व्यवस्था बिगड़ रही है

वे उन लोगों के शोर में छिप जाते हैं

जो इस व्यवस्था को और अधिक बिगाड़ते रहना चाहते हैं

क्योंकि

उसी में उनका हित है.” 17 (लोकतंत्र का संकट-रघुवीर सहाय,र.1,पृ.-316)”

किसी भी देश का लोकतान्त्रिक विकास उस देश की जनता पर निर्भर करती है। जनता का राजनीतिक रुझान और सहभागिता उसे सही रास्ते पर ले जाता है।“राजनैतिक अधिकार के अनेक उपयोग हैं और उन उपयोगों को आप ही कर सकते हैं,करते हैं-अपने रचनात्मक काम के द्वारा। इस अर्थ में आप राजनैतिक हैं क्योंकि आप राजनैतिक नहीं होंगे तो आप अपने अधिकारों के बारे में सचेत नहीं होंगे,आप इन अधिकारों को शोषकों के लिए छोड़ देने को तैयार होंगें।”(रघुवीर सहाय र.-3,पृ.401)18

रघुवीर सहाय जिस राजनीतिक स्वतंत्रता की बात करते हैं मुक्तिबोध के यहाँ वही जन भागीदारी के रूप में आता है। एक लोकतान्त्रिक देशके भीतर जनता की इच्छाओं कामहत्व सर्वोपरी है.इसको स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं “जनता के साहित्य से अर्थ है ऐसा साहित्य जो जनता के जीवन मूल्यों को जनता के जीवनादर्शों को प्रतिष्ठापित करता हो,उसे अपने मुक्तिपथ पर अग्रसर करता हो। इस मुक्तिपथ का अर्थ राजनैतिक मुक्ति से लगाकर अज्ञान से मुक्ति तक है। अत:इसमें प्रत्येक प्रकार का साहित्य सम्मिलित है,बशर्ते कि वह सचमुच उसे मुक्तिपथ पर अग्रसर करे। ”(र.-5,पृ.76) 19

मुक्तिबोध जन प्रतिरोध से बहुत उम्मीद रखते हैं। उन्हें विश्वास था की चीजें एक न एक दिन बदलेगी.अपनी कविता ‘एक भूतपूर्व विद्रोही काआत्मकथन’ में वो इस विश्वास को कुछ इस तरह व्यक्त करते हैं-

लेकिन, दबी धुकधुकियों,

सोचो तो कि

अपनी ही आँखों के सामने

ख़ूब हम खेत रहे!

ख़ूब काम आए हम!!

आँखों के भीतर की आँखों में डूब-डूब

फैल गए हम लोग!!

आत्म-विस्तार यह/बेकार नहीं जाएगा।

ज़मीन में गड़े हुए देहों की ख़ाक से

शरीर की मिट्टी से, धूल से।

खिलेंगे गुलाबी फूल। 20(एक भूतपूर्व विद्रोही का आत्मकथन-मुक्तिबोध)

जिस गुलाबी फूल के खिलने का जिक्र मुक्तिबोध कर रहे हैं वो वस्तुतः आत्मविस्तार के प्रयत्न का एक उदहारण है। इसमें पूर्ववर्ती यत्नों के प्रति कृतज्ञता के साथ भविष्य के सुनहरे होने की आकांक्षा है। वर्तमान साहित्यिक परिदृश्य पर अपने विचार को रखते हुए कहते हैं कि "यदि हमारा नया कवि मूल्य व्यवस्था विकसित करते हुए मानव समस्या चित्रित करता है,तो निःसंदेह वह युग परिवर्तन करने का श्रेयभागी होगा,भले ही उसे श्रेय मिले या न मिले। (र.-5-पृ.207)" 21

मुक्तिबोध जिस मूल्यव्यवस्था की बात करते हैं,रघुवीर सहाय उसी को लोकतंत्र के संदर्भ में देखते हैं। लोकतंत्र की सफलता ही नए बनती व्यवस्था का आधार है। इसलिए इनके यहाँ भारतीय लोकतंत्र की हक़ीकत की पड़ताल करती बहुत-सी कविताएँ देखने को मिलती है।

बीस वर्ष खो गए भरमें उपदेश में

एक पूरी पीढ़ी जनमी पली पुसी क्लेश में

बेगानी हो गयी अपने ही देश में

वह

अपने बचपन की आजादी 22 (मेरा प्रतिनिधि-रघुवीर सहाय)

रघुवीर सहाय के यहाँ नेहरु युग की असफलता से पैदा असुरक्षाबोध,असफलता,निराशा,घुटन और निराशा से जन्मे यातना को सहज तरीके से देख सकते हैं। आशावादिता के खत्म होने या उससे अलग होने का चित्रण देख सकते हैं। इस चित्रण में भारतीय राजनीति की पतनशीलता तो दिखती ही है साथ उसके क्रूर चेहेरे भी सामने आते जाते हैं।

बीस साल

धोखा दिया गया

वहीं मुझे फिर कहा जाएगा विश्वास करने में

पूछेगा संसद में भोलाभाला मंत्री

मामला बताओ हम कारवाई करेंगें

हाय-हाय करता हुआ हाँ-हाँ करता हुआ हें-हें करता हुआ 23

(एक अधेड़ भारतीय आत्मा-रघुवीर सहाय)

स्वाधीनता के बदलते परिदृश्य में रघुवीर सहाय तथा अन्य कवियों में नए युग के लिए एक उत्साह और उमंग था। लेकिन जैसे-जैसे समय बढता गया.स्वाधीनता के समय देखे गए सपनों से चीजें दूर होती गयी। जनता के भीतर असन्तोष,नाराजगी और मोहभंग की प्रक्रिया की शुरुआत होने लगी। "समता और मनुष्य के बीच की गैर बराबरी को मिटाने के लिए यह व्यवस्था बेकार है। इस तरह के विचार आम होने लगे थे.एक बातचीत के क्रम में रघुवीर सहाय ने स्वतंत्रता के वास्तविक लोकतंत्र के विषय में अपने विचार रखते हुए कहते हैं कि "इस देश में वास्तविक लोकतंत्र तभी आएगा जब किसी को भूखे पेटसोने की जरूरत नहीं रहेगी। क्योंकि भूख चिंतन की हत्या कर,चिंतन रहित समाज बनाती है और इस चिंतन रहित समाज में प्रतिरोध नहीं हो सकता। जिससे सत्ता व्यवस्था का एक छद्म शान्ति से निर्मित हो जाता है। जनता को भूख मिटाने के लिए

रोटी ही नहीं बल्कि रोटी पैदा करने का अधिकार भी चाहिए। क्योंकि उत्पादन के साधनों पर मालिकों का कब्ज़ा मजदुर वर्ग के लिए आर्थिक समानता और शोषण से मुक्ति की सबसे बड़ी रुकावट है। रोटी और रोटी पैदा करने का अधिकार डॉ अलग-अलग चीजें नहीं हैं। रोटी पैदा करने के साधनों पर अधिकार जीवन में पूरा हिस्सा लेने का राजनीतिक अधिकार है और लोकतंत्र उस अधिकार पर अधिकार रखने की आजादी का नाम है।" 24 जिस लोकतंत्र की बात रघुवीर सहाय कर रहे हैं धीरे-धीरे उस लोकतंत्र के प्रति जनता का विश्वास कम होता गया। स्वतंत्रता के समय जिस लोकतान्त्रिक मूल्य की नीव रखी गयी थी वो जल्द हीबिखड़ने लगा.लोकतंत्र बस पंचवर्षीय कर्मकांड में तब्दील हो गया। जिसमें एक मत संपन्न समूह अपने अधिकारों को एक समूह को कुछ सालों के लिए सौंप देता है। 'आत्महत्या के विरूद्ध' के प्रथम संस्करण के वक्तव्य में लोकतंत्र के विषय में अपने विचार रखते हुए कहते हैं कि"लोकतंत्र-मोटे,बहुत मोटे तौर पर लोकतंत्र ने हमें इंसान की शानदार जिन्दगी और कुत्ते की मौत के बीच चांप लिया है।"25 इसलिए इस संग्रह में लोकतंत्र की विफलता को लेकर काफी तीखी आलोचना है। अधिनायक कविता में वो स्पष्ट रूप से पूछते हैं किइस लोकतंत्र का असली भाग्य विधाता कौन है?

राष्ट्रगीत में भला कौन वह

भारत भाग्य विधाता है

फटा सुथन्ना पहने जिसका

गुण हरचरना गाता है...

कौन-कौन है वह जन-गण-मन

अधिनायक वह महाबली

डरा हुआ मन बेमन जिसका

बाजा रोज बजाता है (अधिनायक-रघुवीर सहाय) 26

इसलिए जो चिंता रघुवीर सहाय के यहाँ है वही चिंता मुक्तिबोध के यहाँ भी मौजूद है। अपने समय की कविता पर विचार करते हुए वो कहते हैं कि" नयी कविता को जीवन के मूल तथ्यों से अलग करने का प्रयत्न किया गया। बढ़ते हुए अवसरवाद और भ्रष्टाचार,छीन-झपट,भाग-दौड़,ठेलमठेलवाले शिक्षित मध्यवर्ग के तरुणों ने उक्त साहित्यिक सिद्धांत से प्रभाव भी ग्रहण किया। आधुनिक भाव-बोध वाले सिद्धांत में जनसाधारण के उत्पीडन-अनुभवों,उग्र विक्षोभों और मूल उद्वेगों का बायकाट किया गया।" 27 जनता के बहिष्कृत होते जाने से सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोगों के लिए लोकतंत्र एक तमाशे में बदल गया था जो हर पांच वर्ष पर खेला जानेवाला खेल था।इस कथित लोकतान्त्रिक व्यवस्था से परेसान कवि कहता है:

इस लज्जित पराजित युग में

कहीं से ले आओ वह दिमाग

जो खुशामद आदतन नहीं करता है. 28 (आनेवाला खतरा-रघुवीर सहाय)

आदतन खुशामद नहीं करने के विषमताग्रस्त दौर से गुजर रहे रचनाकार के अन्दर अपने समय और समाज की वास्तविकता को कहने की छटपटाहट हमेशा रहती है। मुक्तिबोध ने विषमताग्रस्त इसी 'अँधेरे में' के जुलुस को

बहुत नजदीक से देख लिया था। उस प्रोसेशन में तत्कालीन समय का सच दिख जाता है। तभी तो सत्ता के उस अँधेरे तिलिस्म के देखे जाने के बाद उनके भीतर एक हलचल पैदा होती है-

इतने में प्रोसेशन में से कुछ मेरी ओर

आँखें उठीं रोषभर,

हृदय में मानो की संगीन नोकें ही घुस पड़ी बर्बर,

सड़क पर उठ खड़ा हो गया कोई शोर-

"मारो गोली,दागो स्साले को एकदम

दुनिया की नजरों से हटकर

छिपे तरीके से हम जा रहे थे कि

आधीरात-अँधेरे में उसने

देख लिया हमको

व जान गया वह सब

मार डालो,उसको खत्म करो एकदम"29 (अँधेरे में-मुक्तिबोध)

आखिर वो कौन सा डर है कि जो सिर्फ देखे जाने के कारण उसे मौत देने के आदेशतक दिलवा देता है। सत्ताधारी वर्ग का वह कौन सा रूप है जो वो जनता से बचाकर रखना चाहता है। दरअसल आजादी के बाद बनी व्यवस्था का आंतरिक स्वरूप उच्चकुलीन संभ्रांत वर्ग ने अपने तरीके से गढ़ा और उसके बाह्य आवरण में लोकतंत्र का भ्रम पैदा किया। "आजका कवि एक असाधारण असामान्य युग में रह रहा है।वह एक ऐसे युग में है,जहाँमानव-सभ्यता-सम्बन्धी प्रश्न महत्वपूर्ण हो उठे हैं।समाज भयानक रूप से विषमताग्रस्त होगया है।चारोंओर नैतिक ह्रास के दृश्य दिखाई दे रहे हैं।शोषण और उत्पीड़न पहले से बहुत अधिकबढ़ गया है।नोच-खसोट,अवसरवाद,भ्रष्टाचारका बाजार गर्म है।कल के मसीहा आज उत्पीड़क हो उठेहैं। अध्यात्मवादी विचारक जनता से दूर जा बैठे हैं।अधिकांश समीक्षकों का जीवन से कोईसम्बन्ध नहीं रहा।वे जीवन के कलात्मक-साहित्यिकबिम्बों की तो व्याख्या करेंगें,किन्तु जीवन से दूर रहेंगे।...समाजके भीतर के विभिन्न वर्गों की खाइयाँ और भी चौड़ी हो गयी हैं। " 30 सार्वभौमिकता और अविभाज्यता के दौर में नागरिक भागीदारी का प्रश्न ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है। इसी नागरिक भागीदारी को साहित्यकार अपनी रचना का विषय बनाता है। जो कुछ खंडित और अधूरा है उसे पूरा करने की जिद्द रचनाकार का अपने समय में विशिष्ट बनाता है। जीवन के बाहरी और भीतरी प्रतिरोध को महसूस करते हुए वो सच्चाई के समीप जाने की कोशिश करता है। इस कोशिश में उसे सभी पुराने प्रतिमानों को तोड़ना पड़ता है और इस प्रक्रिया में आकर ही शायद रचनाकार यह कह पाता है की-

अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे

उठाने ही होंगे।

तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब।

पहुँचाना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार

तब कहीं देखने मिलेंगी हमको

नीली झील की लहरीली थाहें

जिसमें कि प्रतिपल कांपता रहता

अरुण कमल एक,

धंसना ही होगा

झील के हीम-शीत सुनील जल में। 31 (अँधेरे में-मुक्तिबोध)

आजादी की लड़ाई के समय देखे गए स्वप्न के खंडित होने का सिलसिला आजादी मिलते ही हो गयी थी। तत्कालीन सभी रचनाकारों ने इस सच्चाई को अपनी रचना का विषय बनाया है। इस लोकतान्त्रिक आजादी के ऊपर संदेह किया है और प्रश्न उठाया।इन सभी प्रश्नों से मुक्तिबोध और रघुवीर सहाय दोनों टकराते हैं।

संदर्भ सूचि:

1. https://hi.wikipedia.org/wiki/
2. https://kavitakosh.org/विप्लव गान
3. https://kavitakosh.org/पुष्प की अभिलाषा
4. https://kavitakosh.org/हुँकार
5. https://kavitakosh.org/राम की शक्तिपूजा
6. https://www.hindwi.org/
7. सहाय,रघुवीर,पृष्ठ-41,रचनावली-1,2000,सं- सुरेश शर्मा
8. https://hindi-kavita.com/HindiTaarSaptakGajananMadhavMuktibodh.
9. https://www.hindisamay.com
10. https://kavitakosh.orgसुबह ए आजादी
11. https://hindi-kavita.com/HindiSelectedPoetryGirijaKumarMathur.
12. सहाय,रघुवीर,पृष्ठ-67,रचनावली-1,संस्करण-2000,सं- सुरेश शर्मा
13. सहाय,रघुवीर,पृष्ठ-120,रचनावली-1,संस्करण-2000,सं- सुरेश शर्मा
14. मुक्तिबोध,पृष्ठ-350,रचनावली-2,संस्करण-1985.सं- नेमिचंद्र जैन
15. मुक्तिबोध,पृष्ठ-206,रचनावली-5,संस्करण-1985.सं- नेमिचंद्र जैन
16. मुक्तिबोध,पृष्ठ-77,रचनावली-2,संस्करण-1985.सं- नेमिचंद्र जैन
17. सहाय,रघुवीर,पृष्ठ-316,रचनावली-1,संस्करण-2000,सं- सुरेश शर्मा
18. सहाय,रघुवीर,पृष्ठ-401,रचनावली-3,संस्करण-2000,सं- सुरेश शर्मा
19. मुक्तिबोध,पृष्ठ-76,रचनावली-5,संस्करण-1985.सं- नेमिचंद्र जैन
20. मुक्तिबोध,पृष्ठ-139,रचनावली-2,संस्करण-1985.सं- नेमिचंद्र जैन
21. मुक्तिबोध,पृष्ठ-207,रचनावली-5,संस्करण-1985.सं- नेमिचंद्र जैन
22. सहाय,रघुवीर,पृष्ठ-110,रचनावली-1,संस्करण-2000,सं- सुरेश शर्मा

23. सहाय,रघुवीर,पृष्ठ-140,रचनावली-1,संस्करण-2000,सं- सुरेश शर्मा
24. सहाय,रघुवीर,पृष्ठ-328,रचनावली-4,संस्करण-2000,सं- सुरेश शर्मा
25. सहाय,रघुवीर,पृष्ठ-103,रचनावली-1,संस्करण-2000,सं- सुरेश शर्मा
26. सहाय,रघुवीर,पृष्ठ-111,रचनावली-1,संस्करण-2000,सं- सुरेश शर्मा
27. मुक्तिबोध,पृष्ठ-208,रचनावली-5,संस्करण-1985.सं- नेमिचंद्र जैन
28. सहाय,रघुवीर,पृष्ठ-160,रचनावली-1,संस्करण-2000,सं- सुरेश शर्मा
29. मुक्तिबोध,पृष्ठ-330,रचनावली-2,संस्करण-1985.सं- नेमिचंद्र जैन
30. मुक्तिबोध,पृष्ठ-196,रचनावली-5,संस्करण-1985.सं- नेमिचंद्र जैन
31. मुक्तिबोध,पृष्ठ-348,रचनावली-2,संस्करण-1985.सं- नेमिचंद्र जैन